# आस-पास की खोज

## परिचय

मध्यप्रदेश की समस्त शासकीय माध्यमिक शालाओं में 'आस-पास की खोज' प्रोजेक्ट विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, कल्पनाशीलता और जागरुकता विकसित करने के उद्देश्य से लागू किया गया है। इस प्रोजेक्ट के माध्यम से विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता एवं अन्वेषण (खोज करने) की प्रवृत्ति को विकसित करने तथा आस-पास के परिवेश से परिचित कराने की विशेष पहल की जा रही है।

## आस पास की खोज प्रोजेक्ट के उद्देश्य

- बच्चों की कल्पनाशीलता, गतिविधियों और छोटे छोटे प्रश्न करके सीखने और अपने अनुभवों को साझा करने का अवसर प्रदान करना।
- बच्चों में स्व चिंतन, छोटे समूहों में बातचीत करना और स्वयं करके सीखने की आदत को प्राथमिकता देना।
- सृजन और पहल को विकसित करने के लिए बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में भागीदार बनाना/अभिप्रेरित कराना।
- हमारे प्रदेश की भौगोलिक विशेषताओं व मौसम के प्रभावों को जानना व जागरुक करना।
- विद्यार्थियों में अपनी संस्कृति, परंपरा व रीति-रिवाज के प्रति गौरव की भावना का विकास करना।
- देश की रक्षा में बलिदान देने वाले महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता का भाव रखना तथा उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करना।
- स्वयं व परिवार के बारे में जानना और अपने परिवेश को समझना।
- अपने पूर्वजों के कार्यों व उपलब्धियों के प्रति सम्मान का भाव जाग्रत करना।
- स्थानीय स्तर पर विविध प्रकार के कार्यो/व्यवसाय के बारे में जानना तथा उनसे जुड़े व्यक्तियों के प्रति सम्मान का भाव रखना।

## आस पास की खोज प्रोजेक्ट के दिशा निर्देश

- सत्र 2019-20 में आस-पास की खोज प्रोजेक्ट अंतर्गत प्रदेश के समस्त शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में गतिविधियाँ आयोजित की जाना है।
- प्रोजेक्ट संचालन हेतु थीमवार सुझावात्मक गतिविधियाँ दी जा रही हैं।
- दी गई थीम्स में से किन्हीं तीन थीम्स पर विद्यार्थियों से कार्य करवाया जाना है।
- चयनित की गई प्रत्येक थीम पर विद्यार्थी द्वारा दो गतिविधियों पर कार्य कराया जाना है।
- प्रोजेक्ट की समस्त गतिविधियाँ आस-पास की खोज पुस्तिका में ही लिखी जाना है।
- प्रोजेक्ट कार्य हेतु समस्त जिलों के सभी माध्यमिक शालाओं को रु. 3000/- की राशि सामान्य मद में उपलब्ध कराई जाएगी। इस उपलब्ध राशि से गतिविधियों का आयोजन किया जाना है।

## गतिविधि क्रियान्वन में शिक्षक की भूमिका

- प्रोजेक्ट कार्य में शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक के रूप में होगी।
- शिक्षक सभी विद्यार्थियों को गतिविधियों में सहभागिता के लिए प्रेरित करें।
- जिन गतिविधियों में भ्रमण के लिए शाला से बाहर जाने की आवश्यकता हो उन्हें शिक्षक की उपस्थिति में ही किया जाए।

## प्रोजेक्ट विकास के बिंदु

- प्रोजेक्ट का शीर्षक - चयनित थीम के अंतर्गत दी गई सुझावात्मक गतिविधि अथवा उसी थीम पर विद्यार्थियों द्वारा चयनित की गई गतिविधि का शीर्षक लिखा जाए।
- उद्देश्य - गतिविधि विद्यार्थियों द्वारा किस उददेश्य से चयनित की गई, उसका उल्लेख किया जाए।
- प्रयुक्त सामग्री - जो सामग्री गतिविधि के लिए आवश्यक हो उसका उल्लेख किया जाए।
- प्रक्रिया - प्रोजेक्ट कार्य के अंतर्गत विद्यार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से क्या-क्या तैयारी की जानी है तत्पश्चात उसका क्रियान्वयन कैसे किया जाता है उसका विस्तार से उल्लेख विद्यार्थी द्वारा किया जाना है। जैसे किसी व्यवसाय की जानकारी प्राप्त करने हेतु विद्यार्थी स्वयं कुछ प्रश्न तैयार करता है, सहपाठियों, शिक्षक व परिवार के सदस्यों व अन्य व्यक्तियों से सहायता लेता है आदि। तत्पश्चात उसका क्रियान्वयन करता है।

- तथ्यों का संकलन - गतिविधि के दौरान प्राप्त जानकारी का उल्लेख किया जाए।

जैसे - फोटो ग्राफ्स, समाचार पत्रों की कटिंग या अन्य कोई तथ्य जो गतिविधि से संबंधित हों।

- तथ्यों/जानकारी का विश्लेषण - प्रोजेक्ट के अंतर्गत प्राप्त जानकारी/डाटा का विशलेषण किया जाए।
- अभिलेखीकरण/प्रतिवेदन तैयार करना - सम्पूर्ण गतिविधि की प्रक्रिया पर प्रतिवेदन तैयार किया जाए।

निष्कर्ष - गतिविधि में दिए गए उददेश्यों की प्राप्ति का उल्लेख किया जाए एवं गतिविधि उपरांत विद्यार्थियों ने क्या सीखा इसका उल्लेख किया जाए।

## प्रोजेक्ट मूल्यांकन के आधार

- उद्देश्य पर आधारित,स्वनिर्मित,मौलिकता,सृजनात्मकता
- नवीनता, प्रस्तुतीकरण, परिवेश से जुडाव, कम मूल्य की सामग्री
- परिवेश से प्राप्त सामग्री का उपयोग,संदेश

## जिला स्तर पर की जाने वाली कार्यवाही

- ब्लॉक स्तर से प्राप्त प्रोजेक्ट का अवलोकन एवं परीक्षण डाइट के संबंधित विषय के विशेषज्ञों द्वारा किया जाएगा। परीक्षण उपरांत उत्कृष्ट तीन प्रोजेक्ट डाइट स्तर पर संधारित कर प्रतिवेदन राज्य शिक्षा केन्द्र को दिसंबर माह के अंत तक आवश्यक रूप से भेजा जाए।

## राज्य स्तर पर की जाने वाली कार्यवाही

- राज्य स्तर से उत्कृष्ठ तीन प्रोजेक्ट को प्रोत्साहन हेतु पुरूस्कृत किया जाएगा।

## थीम एवं सुझावात्मक गतिविधियाँ

| क्र. | थीम | सुझावात्मक गतिविधियाँ |
|---|---|---|
| 1. | **नदियों का संरक्षण** | नर्मदा, ताप्ती, शिप्रा, चम्बल, बेतवा, शिवना व अन्य नदियों के तटीय क्षेत्रों के लिए - |

- जल संरक्षण की आवश्यकता व प्रदूषित जल के उपयोग से होने वाले नुकसान/ हानि पर जानकारी संकलित कर प्रदर्शित करना।
- जल संरक्षण के संदेश गाँव/शहर में प्रदर्शित करना।
- मुख्य ग्राम/ग्राम पंचायतों में जैविक खेती की जानकारी उपलब्ध कराना।
- विद्यार्थियों द्वारा मंदिर आने वाले भक्तों को परिसर की साफ-सफाई हेतु जागरूक करना।

2. **नदियों/जलाशयों को प्रदूषित करने के मुख्य स्त्रोतों व कारणों को जानना।**

**नदियों/जलाशयों के प्रदूषित होने के प्रमुख कारण-**

- मनुष्य की दोषयुक्त जीवन शैली जैसे- नदियों में साबुन से नहाना, कपड़े धोना, जानवरों को नहलाना, वाहनों को धोना व अन्य।
- धार्मिक गतिविधियाँ जैसे- मूर्ति विसर्जन, पूजन सामग्री का विसर्जन आदि।
- घरों, गावों तथा शहरों से निकलने वाला कचरा।
- बडे शहरों व कस्बों से निकलने वाला सीवेज नदियों में प्रवाहित करना।
- उद्योगों से होने वाला प्रदूषण।
- लघु व्यवसायिक/खनन गतिविधियों का संचाल

**नदियों/जलाशयों को प्रदूषण से बचाव के लिए की जाने वाली गतिविधियाँ**

- उपरोक्त कारणों से नदियों को होने वाली हानि व खतरों से स्थानीय लोगों को अवगत कराते हुए जागरूक करना।
- नदी/जलाशय के किनारे खुले में लोगों को शौंच न करने की सलाह देकर इससे होने वाले खतरेां से लोगेां केा अवगत कराना।

- नदी/जलाशयों के किनारे पृथक से विसर्जन स्थल हेतु स्थानीय लोगों को प्रोत्साहित करना।
- नदी/जलाशय की सीमाओं से अतिक्रमण हटाने की पहल करना।
- बडे शहरों व कस्बों से निकलने वाला सीवेज नदियों में प्रवाहित करने पर रोक लगाने हेतु जागरुकता अभियान चलाना।
- पॉलीथिन केा नदी/जलाशयों में फेंकने से रोकना।
- अत्यधिक मात्रा में रेत उत्खनन कर्ताओं को नदी/जलाशयों के प्रति अपने दायित्वों का बोध कराना।
- जैविक कचरे द्वारा जैविक खाद बनाना व जैविक कृषि का प्रचार प्रसार करना।
- नदी के घाटों तथा महत्वपूर्ण स्थानों पर सोलर ऊर्जा आधारित स्क्रीन लगवाकर लोगों को आकर्षित कर जागरूक करना।
- औद्योगिक प्रदूषित जल को नदियों में मिलने से रोकना।
- नदियों के कटाव को रोकने हेतु तटीय क्षेत्रों पर वृक्षारोपण करना।

**नदियों/जलाशयों के संरक्षण की विधियॉ**

3. **भारतीय संस्कृति के महत्व को जानना।**

**मेले एवं त्यौहार** – स्थानीय क्षेत्र में मनाएँ जाने वाले त्यौहार,, वहॉं लगने वाले मेले आदि जैसे - खजुराहो का लोकरंजन नृत्य महोत्सव, नरसिंहपुर का बरमान मेला, दमोह का नोहटा उत्सव, धर्मराजेश्वर का शिवरात्रि मेला।

**लोक नृत्य** – स्थानीय क्षेत्र के लोक नृत्य जैसे- आदिवासियों के सहारिया एवं भगोरिया नृत्य, बघेलखण्ड का स्वांग नृत्य, बुंदेलखण्ड का राई नृत्य, मालवा का मॉच नृत्य, निमाड़ का गणगौर आदि।

**लोक गीत**– स्थानीय क्षेत्र में गाये जाने वाले लोक गीत जैसे- होली पर गाए जाने वाले फाग गीत, बघेलखण्ड का बिदेशिया गीत, कजरी, सोहर, चैती लंगुरिया आदि।

4. **देश की रक्षा में बलिदान देने वाले महापुरूषों के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करना।**

- सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने वाले महापुरूषों के योगदान पर एक रिपोर्ट तैयार करना
- स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले स्थानीय स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानकारी संकलित कर उनके योगदान पर अभिलेख तैयार करना।
- राष्ट्रीय आंदोलन एवं सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने वाले महापुरूषों के चित्रों का संकलन कर एलबम तैयार करना।
- राष्ट्रीय आंदोलन के नरम दल व गरम दल के प्रमुख नेताओं की भूमिका पर रिपोर्ट तैयार करना।
- स्थानीय स्तर पर अथवा विशेष अवसरो पर महापुरूषों को सम्मानित किए जाने की रिपोर्ट तैयार करना।

5. **मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों की जानकारी एकत्रित करना।**

- ऐतिहासिक इमारतों के निर्माण में जो विशिष्ट शैलियाँ और तकनीकी विकसित हुई उस पर रिपोर्ट तैयार करना।
- ऐतिहासिक व दर्शनीय स्थलों के चित्र एकत्रित कर एलबम तैयार करना।
- स्थानीय स्तर के किसी पुराने मंदिर, खण्डहर, स्मारक, संग्रहालय का भ्रमण कर प्रतिवेदन तैयार करना।
- निकटवर्ती अभ्यारण्य/चिड़िया घर/राष्ट्रीय उद्यान का अवलोकन करवाना व बच्चों द्वारा संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार करवाना।

6. राष्ट्रीय एकीकरण की समझ विकसित करना

- राष्ट्रीय एकीकरण को सुदृढ बनाने हेतु स्थानीय लोगों की भागीदारी कैसे सुनिश्चित हो इससे संबंधित जानकारी संकलित कर प्रतिवेदन तैयार करना।
- स्थानीय स्तर पर प्रबुद्वव्यक्तियों के साक्षात्कार तैयार करना।
- कक्षागत गतिविधियों में सभी को समान अवसर देना।
- राष्ट्रीय पर्वों पर निबंध प्रतियोगिता/क्विज।
- राष्ट्रीय पर्वो के महत्व को समझाने हेतु विभिन्न राष्ट्रीय पर्वों पर नाटक मंचन करना।
- राष्ट्रीय प्रतीकों एवं मध्यप्रदेश राज्य के प्रतीकों के चित्रो का संकलन करना।

**अपने जिले की औद्योगिक इकाइयों को जानना।**

- अपने जिले की प्रमुख औद्योगिक इकाइयों का भ्रमण कर उसमें तैयार किए जाने वाले उत्पादों की जानकारी एकत्रित कर रिपोर्ट तैयार करना। जैसे- सतना की सीमेंट फैक्ट्री, देवास/होशंगाबाद की नोट प्रेस, बीना रिफायनरी, गेल इंडिया गुना, मण्डीदीप, पीथमपुर उद्योग क्षेत्र आदि।
- अपने जिले अन्तर्गत चलने वाले हस्तकरघा (चंदेरी, महेश्वरी साड़ी, बाघ, भेरवगढ़ प्रिंट) का अवलोकन करते हुए निर्माण की प्रक्रिया के अनुसार प्रतिवेदन तैयार करना।
- रेशम के कीडे से सिल्क तैयार करने की प्रक्रिया पर रिपोर्ट तैयार करना।

**प्राकृतिक आपदा**

- प्राकृतिक आपदा (बाढ़, आग, आंधी, भूकंप, भू-स्खलन आदि) के बचाव के तरीके एवं सावधानी।
- अपने जिले, आस-पास यदि बाढ़,, तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाएँ आई हो तो समुदाय के व्यक्तियों से जानकारी एकत्रित कर रिपोर्ट तैयार करना।
- स्थानीय लोगों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करना और वृक्षारोपण से होने वाले फायदे के प्रति जागरूक करना।

7. **सरकारी सेवाऐं जैसे- रेल, डाकघर, बैंक, टेलीफोन, चिकित्सालय, बिजली आदि सेवाओं के प्रति जागरुक होना**

- अपने नगर या निकट के रेल्वे स्टेशन से टिकट, आरक्षण आदि की प्रक्रिया के बारे में जानकारी लेकर रिपोर्ट तैयार करना।
- डाकघर में जाकर वहाँ की पुरानी कार्यप्रणाली एवं नवीन कार्य प्रणाली की जानकारी लेकर और दोनो की तुलनात्मक रिपोर्ट तैयार करना।
- विभिन्न डाक टिकिट का संग्रह कर एलबम तैयार करना।
- किसी बैंक में जाकर खाता खोलने की प्रक्रिया को जानना, खाता खोलने के लिए कौन कौन से दस्तावेजों की आवश्यकता होती है। बैंक की अन्य सेवाओं जैसे ।ज्ड एवं आनलाइन लेन देन के बारे में जानकारी एकत्र करना।
- दूरसंचार विभाग के कार्यालय में जाकर दूरसचांर सेवाओं एवं इण्टरनेट के बारे में जानकारी लेना।
- बिजली विभाग के कार्यालय में जाकर बिजली के बिल भरने की प्रक्रिया एवं बिल की दूसरी प्रति प्राप्त करने के लिए जानकारी लेना।
- स्थानीय स्वास्थ्य केन्द्रों पर उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानना।

8. **कृषि क्षेत्र में जागरुकता।**

- सिंचाई के आधुनिक एवं परम्परागत साधनों के बारे में जानकारी एकत्र करना।
- अपने क्षेत्र में उगाई जाने वाली विभिन्न फसलों की जानकारी एकत्र करना।
- किसी एक फसल के बोने से लेकर उत्पादन तक की सम्पूर्ण प्रक्रिया पर क्रमवार आलेख चित्र सहित तैयार करना।
- जैविक खेती की प्रक्रिया व उसके महत्व को समझ कर, जैविक खाद बनाने की विधि की जानकारी एकत्र करना।
- औषधीय पौधों की नक्षत्र वाटिका तैयार करना।
- वनों से प्राप्त होने वाली सामग्री व उनकी दैनिक जीवन में उपयोगिता पर जानकारी एकत्र करना।
- ऋतुओं के अनुसार उगाई जाने वाली फसलों पर रिपोर्ट तैयार करना।

9. **ऊर्जा उत्पन्न करने वाले विभिन्न संयत्रों को जानना।**

- मध्यप्रदेश के कई जिलों में ऊर्जा संयत्र लगाए गए हैं जैसे-
- 1 देवास में पवन उर्जा संयत्र
- 2 सिंगरौली एवं खण्ड़वा में तापीय उर्जा संयत्र
- 3 ओंकारेश्वर में जल ऊर्जा संयत्र
- 4 रीवा जिले में सौर ऊर्जा संयत्र
- अपने जिले में ऊर्जा उत्पन्न करने वाले सयंत्र का भ्रमण कर ऊर्जा कैसे उत्पन्न होती है, जानकारी एकत्र कर रिपोर्ट तैयार करना।

- सौर उर्जा के दैनिक जीवन में होने वाले उपयोग पर एक रिपोर्ट तैयार करना।
- सौर उर्जा पर्यावरण प्रदुषण को कम करने में किस प्रकार सहायक है, रिपोर्ट तैयार करें।

10. **भारतीय संविधान एवं उसमें निहित मूल्यों को जानना एवं उनके महत्वों को समझना।**

- हमारे परिवार/समुदाय में बेटे व बेटियों के बीच किए जाने वाले भेदभावों को मिटाने के संबंध में जागरूकता हेतु चित्र एकत्रित कर एलबम बनाना।
- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सार्वजनिक सम्पत्ति हमारे लिए है यह भाव निवासियों में जाग्रत करने हेतु स्लोगन/संदेश तैयार करना।
- अपने आस-पास के क्षेत्र का भ्रमण कर पता लगाएँ कि क्या किसी नागरिक के अधिकारों का हनन हुआ है ?यदि ऐसा हो रहा है तो उस पर रिपोर्ट तैयार करना।
- अपने आस-पास के कम से कम दस परिवारों में पता लगाना कि 6 से 14 आयु के कितने बच्चे हैं तथा उनमें से कितने विद्यालय नहीं जाते, उनके विद्यालय न जाने के कारण का पता लगाकर रिपोर्ट तैयार करना।

11. **लोक कला एवं हस्तशिल्प के महत्व को जानना।**

- मध्यप्रदेश में कई प्रकार की हस्त शिल्पकला पाई जाती हैं जैसे-

  1 टीकमगढ में धातुशिल्प

  2 शिवपुरी में लोहशिल्प

  3 टेराकोटा मिट्टी के खिलौन

  4 कागज की लुगदी से बनी वस्तुऐं।

  5 जबलपुर में संगमरमर पत्थर पर नक्कासी।

  6 झाबुआ जिले की पिथौरा कला

  7 मंडला जिले की पतंगढ पेंटिग, भित्तिचित्र आदि।
- अपने जिले में पाईजाने वाली हस्तशिल्प की विशेषताओं का उल्लेख प्रोजेक्ट कार्य में करें।
- शिल्प बाजार या मृगनयनी का भ्रमण कर हस्त कला निर्मित वस्तुओं का अवलोकन कर रिपोर्ट तैयार करें।